ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 21 कुल पृष्ठ-8 10 से 16 अक्टूबर, 2024 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि सम्वत् 1960853125 सम्वत् 2081 आ. कृ.-11

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आवश्यक बैठक दिनांक 21 सितम्बर, 2024 को 'महर्षि दयानन्द भवन' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के सभागार में हुई सम्पन्न

बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव जी ने सभा की गतिविधियों से अवगत कराया

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने दिया विशेष संदेश

विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारियों एवं प्रमुख आर्य कार्यकर्ताओं ने लिया भाग

वर्ष 2025 में आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मनाने का लिया गया निर्णय

दिनांक 21 सितम्बर, 2024 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की महत्त्वपूर्ण बैठक सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस महत्त्वपूर्ण बैठक में विविध प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। बैठक में सर्वप्रथम सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव ने सभा की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला जिसकी सभी सदस्यों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किये जा रहे कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया।

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने बैठक में सभा के तत्वावधन में विगत वर्षों में किये गये कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में देश के विभिन्न प्रान्तों तथा विदेशों में भी अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गए जो अत्यन्त सफल रहे। मुख्यरूप से कोलकाता (बंगाल), जोधपुर (राजस्थान), खटकड़ टोल, जीन्द (हरियाणा), रायपुर (छत्तीसगढ़), मेरठ (उत्तर प्रदेश), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड), अमृतसर (पंजाब) तथा नलगोंडा (तेलंगाना) आदि कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जिनमें हजारों-हजारों लोगों ने सम्मिलित होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती को उत्साह के साथ मनाया। इसी प्रकार पोर्ट लूईस (मॉरीशस), बर्मिघम (इंग्लैण्ड), डरबन (दक्षिण अफ्रीका), नैरोबी (केनिया), कम्पाला (युगाण्डा) में भी महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के समारोह अत्यन्त उत्साह के साथ आयोजित किये गये हैं जिनमें सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव, कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, सभा के अन्तरंग सदस्य श्री बिरजानन्द जी तथा अन्य पदाधिकारी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। वर्ष 2025 में आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इसलिए हम सभी को इसे भी विशाल स्तर पर मनाने की योजना तैयार करनी है। स्वामी जी ने बताया कि महासम्मेलनों में बाहर से आने वाले महानुभावों के लिए विशेष व्यवस्था करने की आवश्यकता पड़ती है, उसके लिए अभी से तैयारियाँ शुरू करनी होगी। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने के प्रस्ताव पर सभी सदस्यों ने सहमति व्यक्त की तथा सम्मेलन को सफल बनाने के लिए पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया। स्वामी आर्यवेश जी ने प्रान्त के अधिकारियों से अपील करते हुए कहा कि आप सभी अपने-अपने प्रान्त में आर्य समाज संगठन को मजबूती प्रदान करें तथा आने वाले वर्ष 2025 में आर्य सामज के स्थापना की 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम तैयार करके बड़े-बड़े सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लें।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन देश की राजधनी दिल्ली में आयोजित करने का प्रस्ताव रखा, क्योंकि दिल्ली देश की राजधानी है और दिल्ली में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की गूंज दूर तक पहुँचती है।

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि दिल्ली में कार्यक्रम करना अत्यन्त आवश्यक है। अतः इस सम्बन्ध में यह निर्णय लिया जाये कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में किया जायेगा, परन्तु इसकी तारीखें बाद में घोषित की जायेंगी। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के प्रस्ताव को उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से पारित किया और दिल्ली में ही करने का निर्णय किया गया। अन्त में शांति पाठ के बाद बैठक सम्पन्न हुई।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

युवाशक्ति का निर्माण आवश्यक

– डॉ. जगदीश शास्त्री

यू मिश्रणामिश्राणे धातु से 'युवा' शब्द निष्पन्न होता है जिसका अभिप्राय है कि युवा में मिश्रण और अमिश्रण जोड़ने और तोड़ने, निर्माण और विध्वंस की सारी शक्तियां निहित हैं। अर्थात् युवा 'शक्ति' का पर्याय है। शक्ति जो अदम्य है, अकुण्ठ है। कुछ करने के आनन्दमय उत्साह से भरी है। कुछ नया, कुछ बेजोड़, कुछ अलग करने की चाहत से परिपूर्ण है। जो चाहे इस शक्ति को अपना ले, अपने पक्ष में कर ले और जैसा चाहे इनसे काम करा ले। जिधर चाहे इन्हें ले जाए। युवा 'शक्ति' है जिसे नेतृत्व की आवश्यकता है। कुशल मार्गदर्शक की आवश्यकता है। युवा शक्ति का सही उपयोग करने वाले की आवश्यकता है। आज के नेता, आज के गुरु, आज के अभिभावक, माता और पिता युवा शक्ति का नेतृत्व नहीं कर रहे हैं। उन्हें मार्गदर्शन नहीं कर रहे। उन्हें अपने ढंग से, अपने रास्ते पर चलने के लिए छोड़ दिया गया है। युवा शक्ति स्वयं निर्णय लेने में बुद्धि की जगह मन की बात अधिक मानता है। अतएव अच्छाइयों से अधिक बुराईयों की ओर झुकता है। पूरे राष्ट्र और समाज के लिए सोचने की जगह वह व्यक्तिवादी स्वार्थी बन जाता है। अतः आवश्यकता है कि युवा की शक्ति और वृद्ध का अनुभव मिलकर काम करें। क्योंकि युवा शक्ति का पर्याय है तो प्रौढ़ ज्ञान व लम्बे अनुभव का। युवा के पास बहुमूल्य शक्ति है तो वृद्ध के पास अमूल्य अनुभव है। शक्ति से हम आगे पीछे चल सकते हैं पर चलने की दिशा कौन सी हो यह शक्ति नहीं बता सकती। क्योंकि शक्ति अंधी है, नेत्रहीन है। और नेत्रहीन का बिना देखे चलना व्यर्थ है तथा विध्वंसक भी। इसके विपरीत अमूल्य ज्ञान व अनुभव से हम भूत-भविष्य, हित-अहित सब कुछ जान जाते हैं, चलने की दिशा का ज्ञान हो जाता है। पर चलने के लिए पैर नहीं है, पैरों में शक्ति नहीं है; क्योंकि ज्ञान व अनुभव स्वयं लंगड़ा है। अतः लंगड़े का ज्ञान नपुंसक है, अकिंचित्कर है। निष्कर्ष यह निकला कि अकेला ज्ञान और अकेली शक्ति दोनों अधूरे हैं। एक अंधा है, दूसरा लंगड़ा। एक के पास पैर हैं, आंख नहीं। दूसरे के पास आंख है, पैर नहीं। एक के पास अपार अनुभव का भण्डार है पर शक्ति नहीं है; दूसरे के पास विपुल शक्ति है पर अनुभव नहीं है। अतः ये अकेले कुछ नहीं कर सकते। कुछ करने के लिए आवश्यकता है दोनों के सहयोग की, संगठन की; दोनों के मिलकर काम करने की। अंधा लंगड़े को अपने कंधे पर बिठा ले, लंगड़ा रास्ता दिखाता जाए और अंधा चलता जाए। अर्थात् युवा वृद्धों का सम्मान करें, उनसे मार्गदर्शन लें और वृद्ध युवाशक्ति का उपयोग करें। पर इस सहयोग, संगठन और परस्पर मेल की पहल दो में से किसी एक को करना होगा।

समय से प्रयास- आर्य समाज के संदर्भ में युवा शक्ति की बात करें तो आज प्रायः आर्य समाजों में युवक-युवतियों का अभाव है। आर्य समाज मात्र वृद्धों का समाज बन चुका है। वृद्ध धीरे-धीरे काल कवलित होते जा रहे हैं तथा उनके परिवार का कोई प्रतिनिधि समाज से नहीं जुड़ रहा है। इस प्रकार नए सदस्यों के अभाव में आर्य समाज क्षीण होता जा रहा है। आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के लोग प्रायः यह सुनाते मिल जाते हैं कि हमारे माता पिता पक्के आर्य समाजी थे, हम सब जब तक सन्ध्या नहीं कर लेते, हमें खाना नहीं मिलता था। वे हमें आर्य समाज के सत्संगों में बचपन से ही ले जाया करते थे। ... समाज के सत्संगों को सुनते-सुनते हम भी पक्के समाजी बन गए। ... इत्यादि। पर यही समाजी अपने बच्चों, पौत्र-पौत्रियों को समाज में नहीं लाते और झूठ ही उन्हें कोसते हैं। अपने माता-पिता की तरह इन्होंने भी अपने बच्चों को बचपन से ही समाज में लाने की आदत क्यों नहीं डाली? ऐसा पूछने पर वे स्वयं ही अनेक बहाने बनाते हैं तथा इसके लिए नई पीढ़ी को ही दोषी मानते हैं। पर वस्तुतः नई पीढ़ी के प्रति दोषारोपण अनुचित है। इसके लिए पूर्ण उत्तरदायी पुरानी पीढ़ी है। जिन माता पिता ने बचपन और किशोर अवस्था से ही बच्चों को समाज और सत्संग के प्रति रुचि उत्पन्न नहीं की, और युवा होने पर उन्हें एकाएक समाज में रुचि लेता हुआ देखने की कामना करते हैं। यह उस किसान की तरह मूर्खतापूर्ण है जो समय पर बीज बोये बिना ही फसल काटने की कामना करता है। अतः यदि युवा पीढ़ी को सामाजिक कार्यों में रुचि लेता हुआ देखना चाहते हैं तो एक अच्छे किसान की तरह उनमें बचपन से ही संस्कारों के बीज बोयें, प्रशिक्षित करें। और यदि बाल्यावस्था में बच्चे आपकी बात नहीं मानते तो निम्न नीति का प्रयोग करः-

लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्।।

अर्थात् पांच वर्ष तक बच्चों को प्यार से लोभ लालच देकर अच्छे कार्यों में लगाते रहना चाहिए, किशोर अवस्था में जब बच्चे अनुचित बातों की हठ करने लगें तो कठोरतापूर्वक बर्ताव करें, आवश्यकतानुसार दण्ड देकर भी बच्चों को बुरे आचरण से हटाना और शुभ कार्य में लगाना चाहिए; और जब संतान युवा हो जाए तो उनसे मित्रवत् संवाद के माध्यम से समझाकर मार्गदर्शन करना चाहिए। तात्पर्य यह कि बच्चों के निर्माण में समय पर, अवस्थानुसार निरन्तर लगे रहना चाहिए। जैसा कि हमारे पूर्वजों ने हमारे साथ किया और जिस प्रकार बच्चों की स्कूली शिक्षा के प्रति आज हम भी सदैव सजग और तैनात रहते हैं, उसी प्रकार उन्हें सामाजिक, नैतिक व धार्मिक शिक्षा देने के प्रति भी, आर्य समाज में रुचि पैदा करने के प्रति भी तत्पर रहें। बाल्य और किशोर अवस्था का अभ्यास ही युवा अवस्था में झुकाव और लगाव लाएगा। युवकों को सहसा समाज में लाना बहुत कठिन है।

सामाजिकता की शिक्षाः- आज अर्थ और काम प्रधान भोगवादी समय में युवा स्वार्थी और व्यक्तिवादी हो गया है। उसकी सोच आत्मकेन्द्रित हो गई है। उसकी सोच में मात्र अपना हित निहित हो गया है। सारी दुनियां से वह केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। दुनियां को मात्र अपनी कामनाओं और इच्छाओं की पूर्ति के साधन के रूप में देख रहा है और उपयोग भी कर रहा है। वह स्वयं किसी दूसरे का हितसाधक नहीं बनना चाहता। वह स्वयं किसी दूसरे की कामना और इच्छापूर्ति का साधन नहीं बनना चाहता। उसकी सोच में न समाज है न राष्ट्र, न देश न दुनियां। यहां तक कि अपने परिवार को भी वह मात्र अपने लिए उपयोग करना चाहता है। अपनी सुख-सुविधाओं को परिवार के बीच भी नहीं बांटना चाहता। अपनी उन्नति और प्रगति का भागीदार किसी को नहीं बनाना चाहता, जिसके परिणामस्वरूप एकल परिवार 'न्यूक्लीयर फैमिली' की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अविवाहित रहने एवं विवाह करके भी निःसंतान रहकर स्वच्छंद भोग करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इन सबका उत्तरदायी आज का प्रचार माध्यम, शिक्षापद्धति और स्वयं माता-पिता तथा आचार्य है। इसमें सुधार के लिए भी किशोर अवस्था से ही प्रयास करना होगा। बच्चों को सामाजिकता की शिक्षा देनी होगी। बचपन से ही बताना होगा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हम समाज का एक अभिन्न हिस्सा हैं। आज हम जो कुछ भी हैं, समाज के द्वारा हैं। समाज के प्रतिबिम्ब और समाज के प्रतिनिधि हैं। हम समाज से हैं और समाज हमसे है। हमारी वर्तमान अवस्था प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से समाज की ही देन है। समाज के बिना हमारा जीवन संभव नहीं है। अतः समाज के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि हम स्वयं एक आदर्श मनुष्य बनकर आदर्श समाज का निर्माण करें। उन्नत और श्रेष्ठ समाज के निर्माण में अपना योगदान दें। समाज से लेना और समाज को देना भी सीखें। इसके लिए माता-पिता, बच्चों, किशोरों को समाज में लेकर जाएं, समाज के नियम सिद्धान्तों, आचार विचारों से भलीभांति परिचित करावें। किशारों को सामाजिक मर्यादाओं का पालन करना सिखाएं। समाज के सभी सामूहिक, सामुदायिक गतिविधियों में बच्चों को सम्मिलित करें। पर्व त्यौहार एवं उत्सवों में किशोरों को साथ ले जाएं। समाज के सेवा कार्यों का उन्हें भी भागीदार बनावें। दूसरों की सेवा करके संतुष्ट एवं प्रसन्न होना सिखाएं। सबकी उन्नति में ही अपनी सच्ची उन्नति समझना सिखाएं। समाज के साथ अपनापन पैदा करें। समाज का हित-अहित अपना हित-अहित है, समाज का सुख-दुःख अपना सुख-दुःख है ऐसी अनुभूति विकसित करें। इससे समाज के प्रति रुचि और प्रेम स्वतः पैदा होगा। समाज के प्रेमी यही बालक और किशोर आगे चलकर समाज को समाज प्रेमी युवक के रूप में मिलेंगे। समाज रूपी रथ की बागडोर संभालेंगे।

सामाजिक उत्तरदायित्व सौंपेंः- युवा बलवान् है, ऊर्जावान् है। ऊर्जस्वी एवं तेजस्वी है। उसका स्वभाव गति है, कर्म है, कुछ कर दिखाना है। कुछ युवकों को मात्र सत्संग में बैठकर चले जाना आकर्षक नहीं लगता, नीरस लगता है। उनमें सत्संग सुनकर अपने और समाज के लिए कुछ करने की उमंग पैदा होती है। उनके उमंग और उत्साह को बढ़ाना चाहिए। उन्हें करने का कुछ कर दिखाने का अवसर देना चाहिए। उन्हें उत्तरदायित्व सौंपना चाहिए। युवकों को समाज के विभिन्न सेवा कार्यों का, विभागों का उत्तरदायित्व सौंपने, अधीनस्थ अधिकारी बनाकर प्रशिक्षित करने तथा शीर्ष नेतृत्व सौंपने से समाज के कार्यों को गति मिलेगी तथा समाज में युवक-युवतियों की संख्या भी बढ़ेगी। क्योंकि मनुष्य अपने समान आयु वाले से आकर्षित होता है तथा समान आयु वालों को आकर्षित करता है। स्त्रियां स्त्रियों से, पुरुष-पुरुष से, वृद्ध-वृद्ध से तथा युवक-युवक से आकर्षित होते हैं। क्योंकि मनुष्य समान आयु वालों को अपने सबसे अनुकूल पाता है। समवयस्क, समउम्र के साथ सहज और सुखद अनुभव करता है। अतः वर्तमान नई पीढ़ी को, युवक-युवतियों को समाज में आकर्षित करने के लिए योग्य युवकों को पदाधिकारी बनाकर उत्तरदायित्व सौंपना चाहिए। इसके अलावा युवकों को आकर्षित करने वाली अन्य गतिविधियों जैसे-शारीरिक शिक्षण, नैतिक शिक्षण, योग साधना, चरित्र निर्माण, सिद्धान्त परिचय इत्यादि शिविरों का आयोजन करना चाहिए। आर्य समाज के सदस्यों के घर जो युवक-युवती हैं उन पर विशेष ध्यान देना होगा। उनके लिए लेखन, भाषण, गायन, वादन, नाट्यम, प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद संगोष्ठी, परिचर्चा आदि विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने होंगे। इनमें भाग लेने वाले इन्हीं युवकों को समाज का सक्रिय सदस्य बनना चाहिए क्योंकि सदस्यता समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को जगाती और बढ़ाती है।

नव दम्पति पर ध्यान केन्द्रणः- नव-विवाहित जोड़ा स्वयं युवक-युवती होते हैं तथा इन्हीं की नन्हीं-नन्हीं संतान भी होती है जिनका इन्हें निर्माण करना होता है। यही समाज की भावी पीढ़ी के निर्माता भी होते हैं। अतः जो समाज के सदस्य हैं जिनके बहू बेटे हैं, वे, समाज के अधिकारी और पुरोहित तीनों मिलकर नवदम्पती के सामाजिकीकरण और वैदिकीकरण की योजना चलाएं। इस योजना के अन्तर्गत विवाह संस्कार के समय से ही नवदम्पती में परिवर्तनकारी ऐसा वातावरण बनाएं, ऐसी प्रभावकारी शिक्षा और संस्कार दें, इन्हें सनातन वैदिक परिवार व आर्य समाज से जुड़े होने के महत्व का ज्ञान कराएं, आत्मगौरव एवं आत्मसम्मान पैदा करें कि जिससे इनमें आर्य समाज के प्रति प्रेम और लगाव पैदा हो जाए। विवाह के प्रथम दिन से ही पति द्वारा, सास-ससुर द्वारा, पुरोहित एवं समाज के अधिकारी द्वारा यह विशेष आभास कराया जाए कि आज उनके जीवन का इसलिए भी विशेष दिन है कि आज उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन में प्रवेश हो रहा है; सत्य सनातन वैदिक ईश्वरीय धर्म में दीक्षित होने जा रहे हैं। अतः समस्त अंधविश्वासों को त्यागकर आज से वैदिक जीवन पद्धति की शुरुआत करें। आर्य समाज के पुरोहित और अधिकारियों की उपस्थिति में नवदम्पति को वैदिक साहित्य, यज्ञपात्रादि भेंट किया जाए। इसी दिन से उन्हें आार्य समाज में दीक्षित करने का प्रयास किया जाए। नवदम्पती को विशेषरूप से समाज के यज्ञ का यजमान बनाया जाए। समाज में बुलाकर उन्हें समाज के सदस्यों से परिचय कराया जाए। समाज का सदस्य बनाकर इसकी सार्वजनिक घोषणा की जाए। भरी सभा में पुराने सदस्यों से परिचित कराएं तथा फूलमाला पहनाकर सम्मानित करें। नवयुगल के माता पिता, समाज के पुरोहित और अधिकारी तीनों की सम्मिलित प्रेरणा एवं प्रयास से नवदम्पती की भावी संतान का समय-समय पर सभी संस्कार अवश्य आयोजित किए जाएं। कोई सदस्य यदि एक दो सप्ताह में अनुपस्थित रहता है तो समाज का पुरोहित, अधिकारी एवं सदस्य उसकी सुध लेवें, उसके घर जाकर अनुपस्थिति के कारणों को जानें और आवश्यकता हो तो सहायता के लिए तत्पर रहें। सुख दुःख में साथ देने वाले समाज के प्रति स्वाभिवक रूप से प्रगाढ़ एवं अटूट सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा। नवदंपती के रूप में युवक-युवति और साथ में बालक वृद्ध सभी समाज के प्रांगण में साथ-साथ होंगे। आर्य समाज रूपी उद्यान खिल उठेगा।

श्री विनोद कुमार शास्त्री सुपुत्र स्व. आचार्य वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रेस, दयानन्द मठ रोहतक का असामयिक निधन

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् एवं आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के संचालक स्व0 आचार्य वेदव्रत शास्त्री जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री विनोद कुमार शास्त्री का गत् दिनों असामयिक निधन हो गया। श्री विनोद कुमार शास्त्री की आयु लगभग 60 वर्ष थी। उनके देहावसान से परिवार एवं आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। श्री विनोद कुमार अत्यन्त सरल, सौम्य एवं मिलनसार व्यक्ति थे। वे सदैव शान्त भाव से कार्य करते थे। उनकी अन्त्येष्टी गोहाना रोड स्थित श्मशान भूमि पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न की गई। शोक व्यक्त करने वाले महानुभावों का इस समाचार को सुनने के बाद तांता लग गया और उन्होंने परिवारजनों को दुःख की इस घड़ी में सांत्वना दी। आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी ने भी परिवारजनों से मिलकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परिजनों को सांत्वना दी।

सनातन संस्कृति के मेरूदण्ड – मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता परिवार प्रेम से हम वंचित रह जायेंगे।

कोई पूछे कि भारतीय संस्कृति की परिभाषा क्या है, तो बेहिचक उत्तर दिया जा सकता है कि राम का उदात्त चरित्र ही भारतीय संस्कृति है। एक पूर्ण पुरुष में जितने भी अच्छे गुण हो सकते हैं, राम उन सबके पुंज हैं। उन्होंने अनेकविध कष्ट झेलते हुए भी घर–परिवार, समाज, राष्ट्र और अखिल विश्व के समक्ष त्याग, स्नेह, शील और नैतिकता के जो आदर्श प्रस्तुत किये, उससे भारत का जन–जन प्रभावित है। यहाँ की चप्पा–चप्पा भूमि पर रामत्व की छाप है। रामायण घरेलू जीवन का महाकाव्य है। ऐसा ग्रंथ किसी अन्य देश या संस्कृति में उपलब्ध नहीं।

पिता की आज्ञा शिरोधार्य

कैकेयी ने भले ही छलपूर्वक राजा दशरथ से दो वर माँग लिये हों, पर राजा दशरथ ने कभी अपने मुँह से राम को वन जाने के लिए नहीं कहा था। वे मन ही मन चाहते थे कि राम वन न जाएँ। माता कौशल्या उन पर दबाव डाल रही थीं कि माँ का महत्त्व पिता से बढ़कर है। वे माँ के आदेश मानकर वन न जाएँ। गुरु वशिष्ठ, मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य, पूरा रनिवास और समस्त प्रजाजन राम के पक्ष में थे। लक्ष्मण फुंफकारते हुए कह रहे थे – रघुनन्दन, इसके पहले कि कोई वनवास की बात जाने, आप राज्य पर अधिकार कर लीजिए। मैं आपकी बगल में धनुष लेकर खड़ा हो जाऊँगा। आप काल के समान युद्ध कीजिए। मैं भरत का पक्ष लेने वालों को वाणों से बींध दूँगा। पिता जी कैकेयी का साथ देंगे तो उन्हें भी दंडित करूँगा।

कैकेयी और मंथरा को छोड़कर कोई भी राम का विरोध नहीं कर रहा था। यदि वे वनवास को स्वीकार न करते तो कोई उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने इतना बड़ा त्याग किया, किसलिए? इसलिए कि श्रद्धेय पिता द्वारा दिए वचन झूठे न हो जाएँ। इस प्रकार उन्होंने राज्य का सुख त्याग कर और 14 वर्षों के कठोर व्रत को स्वीकार कर पितृ भक्ति का अभूतपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया। पिता ने भी पुत्र वियोग में प्राण त्याग कर चरम वात्सल्य का परिचय दिया। राम ने परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखा। यहाँ तक कि इतना बड़ा दण्ड देने वाली सौतेली माता कैकेयी की भी उन्होंने निन्दा नहीं की। पंचवटी में जाड़े की ऋतु में कोहरे से ढंकी गोदावरी में स्नान के लिए जाते हुए लक्ष्मण ने कहा था – ऐसी शीत ऋतु में महात्मा भरत तड़के सवेरे उठकर सरयू में नहाते और ठंडी धरती पर सोते होंगे। ऐसा धर्मात्मा पुत्र पाकर भी कैकेयी इतनी क्रूर कैसे हो गयीं? राम बोले लक्ष्मण, रहने दो, माता कैकेयी की निन्दा न करो। इस समय तुम केवल इक्ष्वाकुनाथ भरत की चर्चा करो।

मर्यादा की स्थापना

विमाता कैकेयी ने राम के प्रति क्रूर होकर घोर अनिष्ट किया था। लेकिन उन्होंने भी राम के चरित्र के विषय में जो शब्द बोले, विचारणीय हैं। जब भरत ननिहाल से लौटकर माता कैकेयी से मिले और उन्हें ज्ञात हुआ कि राम को वनवास दिया गया है तो उन्होंने चकित होकर पूछा क्या राम ने किसी ब्राह्मण का धन हरण किया है? किसी निरपराध व्यक्ति की हत्या की है अथवा क्या उनका मन पराई नारी की ओर चला गया है? उन्हें किसलिए वनवास का दण्ड दिया गया है? कैकेयी ने बताया बेटा, राम ने न तो किसी का धन छीना है और न किसी निरपराध की हत्या की है। वह तो पराई नारी की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता, न रामः परदारान् स चक्षुभ्यमिपि पश्यति। रामचरित मानस में भी कहा गया है – जेहि सपनेहु परनारि न हेरी। उड़िया रामायण के अनुसार राम पराई नारी को सहोदर या माता कौसल्या के समान मानते थे। सीता ने भी स्वीकार किया था कि उनमें ही राम का गहन अनुराग है। परिस्थितियों से विवश होकर राम ने सीता को निर्वासित किया था किन्तु उन्होंने अन्य किसी नारी से पाणिग्रहण नहीं किया था। उन्होंने दाम्पत्य जीवन की मर्यादा स्थापित की थी। राम के चरित्र से प्रभावित होकर अन्य रामायणी पात्र भी उनके जैसा आचरण करते थे। लक्ष्मण ने भाभी सीता की चरणों को छोड़कर कभी आँख उठाकर उनके सौंदर्य को नहीं देखा था।

आरम्भ से ही राम जनमत को आदर देने वाले लोकप्रिय शासक रहे थे। जब वे अयोध्या को छोड़कर वन की ओर चले थे तो उनके पीछे ब्राह्मण, ऋषि आदि ही नहीं रजक (धोबी) तन्तुवाय (दर्जी) और अनेक प्रकार के शिल्पी (कारीगर) आदि जन भी अपने–अपने घर छोड़कर चल पड़े थे। राम उन्हें कौशल पूर्वक ही लौटा सके थे। चित्रकूट से दण्डकारण्य की ओर चलते समय अनेक ऋषियों की हड्डियों के ढेर लगे हैं। इन्हें राक्षसों ने मारा है। राम, तुम नगर में रहो या वन में, तुम्हीं हमारे शासक हो। इन राक्षसों से हमारी रक्षा करो। राम ने उन्हें रक्षा का आश्वासन दिया था। रामचरित मानस में भी राम ने कहा है – निसिचरहीन करऊँ महि, भुज उठाई प्रन कीन्ह।

वे धनुष की प्रत्यंचा टंकारते हुए और भारी पगों से धरती को कंपाते हुए दक्षिण की ओर बढ़े थे। मानों वे राक्षसों को चुनौती दे रहे थे। उनके इस कृत्य से ही स्पष्ट है कि सीताहरण न भी हुआ होता तो भी उन्होंने राष्ट्रविरोधी राक्षसों से टक्कर ली होती। कुछ लोगों को भ्रम है कि राम ने एकाध बार मर्यादा का उल्लंघन किया है। जैसे, उन्होंने बाली को छिपकर मारा। बाल्मीकि रामायण को ध्यान से पढ़ा जाए तो पता चलता है कि राम ने बाली को छिपकर नहीं मारा था। बाली ने उनकी ओर वृक्ष और बड़ी–बड़ी शिलाएं फेंकी थीं। राम ने अपने वज्र जैसे वाणों से विदीर्णकर उसे मार गिराया था – क्षिप्तान् वृक्षान् समविध्य विपुलाश्च तथा शिला। बाली वज्र समैर्वाणेर्वज्रेणेव निपाततः।।

वस्तुतः सुग्रीव और सभी मंत्रियों को विश्वास हो गया था कि बाली मायावी असुर के साथ युद्ध करते हुए मारा गया है। तभी मंत्रियों ने सुग्रीव का अभिषेक कर वानरों की प्रथा के अनुसार तारा को उसकी पत्नी बना दिया था। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं था। लेकिन बाली जब असुर को पछाड़कर आया तो उसने बिना सोचे–समझे निर्दोष सुग्रीव को पीट–पीटकर राज्य से बाहर खदेड़ दिया और अनुज वधु रूमा को बलात् अपनी पत्नी बनाया, सुग्रीव के जीते जी उसने यह अपराध किया था। उसने इससे भी बड़ा एक और अपराध किया था –आतंकवादी राक्षस निरन्तर आर्यावर्त की ओर आते रहते थे। वे उत्पात मचाकर ऋषि संस्कृति को नष्ट कर रहे थे। रावण के साथ बाली की सांठ–गांठ थी। बाली इन आतंकवादी राक्षसों को रोकता नहीं था। राक्षसों की घुसपैठ रोकने और दुराचारी रावण से टक्कर लेने के लिए बाली का विनाश अपरिहार्य था। राम ने उससे युद्ध नहीं किया था, उसे दंडित किया था।

सीता निर्वसन के प्रसंग में किसी रामायण में बताया गया कि राम ने एक धोबी के कहने पर सीता को निर्वासित किया। किसी रामायण में बताया गया कि रावण का चित्र बनाने के कारण राम ने सीता के चरित्र पर संदेह किया। जबकि बाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने कभी भी सीता के चरित्र पर संदेह नहीं किया। गुप्तचर ने उन्हें बताया था कि नगर, वन–उपवन, हाट–घाट और चौराहों पर खड़े होकर लोग चर्चा करते हैं कि राम ने पराये घर में कई मास तक रही सीता स्वीकार कर अच्छा नहीं किया। अब हमें भी अपनी स्त्रियों को सहना पड़ेगा क्योंकि जैसा राजा करता है प्रजा उसी का अनुसरण करती है। यह सुनकर राम को गहरा आघात लगा था। जिस जनता के लिए वे सदा समर्पित रहे वही उनका विरोध कर रही थी। राम सीता को प्राणों से भी अधिक चाहते थे। उन्होंने पतिव्रता सीता के चरित्र पर कभी भी संदेह नहीं किया। उन्होंने कहा था – मेरी अन्तरात्मा कहती है कि यशस्विनी सीता शुद्ध है – अन्तरात्मा च मे वेत्ति सीतां शुद्धां यशस्विनीम्। ऐसा था तो राम ने सीता को निर्वासित क्यों किया? उन्होंने ऐसा किया प्रजाजन के मत का सम्मान करने के लिए। उत्तर रामचरित नाटक में राम के चरित्र को सही रूप में समझा गया है।

राम के अभिषेक के समय वशिष्ठ ने कहा था – देखो राम, साधारण जनता ने भी ऐसा अनुभव किया है कि यह अभिषेक मानो उनका ही हो रहा है। तुम्हें भेदभाव से ऊपर उठकर सभी का ध्यान रखना होगा। प्रजारंजन तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है। श्रेष्ठ राज्य की नींव शासकों के व्यक्तिगत त्याग, मर्यादा और बलिदान पर ही रखी जाती है। राम ने गुरु वशिष्ठ को आश्वस्त करते हुए कहा था – गुरुदेव, प्रजा के अनुरंजन के लिए मुझे अपने सभी सुख, माया–ममता, यहाँ तक कि सर्वाधिक प्रिय जानकी को भी त्यागना पड़े तो मुझे रंचमात्र व्यथा न होगी –

स्नेहं दयांच सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचते नास्ति मे व्यथा।।

राम ने एक ओर प्रजारंजक राजा के कर्त्तव्य का पालन किया तो दूसरी ओर उन्होंने पति का दायित्व भी निभाया। उन्होंने सीता को पिता के मित्र बाल्मीकि के आश्रम के निकट इसीलिए रखवाया था ताकि ऋषि सीता और उनकी गर्भस्थ सन्तान को संरक्षण दे सकें। सीता को निर्वासित कर वे स्वयं ही निर्वासित हुए थे। लक्ष्मण सीता को वन में छोड़कर जब अयोध्या लौटे थे तो उन्होंने पाया था कि राम इन चारों दिनों तक कक्ष में बन्द रहे थे। वे न सोये थे और न उन्होंने अन्न ग्रहण किया था। उनका मन लगाने के लिए यज्ञ की व्यवस्था की गई थी। यज्ञ धर्मपत्नी के बिना सम्पन्न नहीं होता। इसलिए उन्होंने किसी अन्य नारी का पाणिग्रहण न कर अपने पार्श्व में सीता की कंचन प्रतिमा स्थापित कराई थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। जहाँ यह प्रभाव नहीं रह गया है वहाँ माँ, पिता, पुत्र, भाई, बहन के सम्बन्धों की पवित्रता भी नष्ट हो रही है। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता – 'परिवार प्रेम' से हम वंचित रह जायेंगे। तब भारत भोगवादी पश्चिम भले ही बन जाए, वह त्याग, स्नेह, शील–सम्पन्न नैतिकतावादी देश नहीं रह जायेगा।

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी संन्यासी सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के पूर्व प्रधान एवं वैदिक विरक्त मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) की तपःस्थली दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश का

वार्षिकोत्सव एवं 24वाँ दुर्लभ शारद यज्ञ 30 सितम्बर, 2024 से 4 अक्टूबर, 2024 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता की

आचार्य महावीर सिंह ने किया सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन

गत् 30 सितम्बर, 2024 से 4 अक्टूबर, 2024 को चम्बा का वार्षिकोत्सव एवं दुर्लभ शारद यज्ञ समारोह पूर्वक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में वार्षिकोत्सव एवं शारद यज्ञ का पूरा कार्यक्रम संचालित हुआ। कार्यक्रम का संयोजन एवं मुख्य यजमान दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष आचार्य महावीर सिंह जी रहे तथा शारद यज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी वेद प्रकाश जी ने सुशोभित किया। यज्ञ के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त सर्वश्री स्वामी देवानन्द जी सरस्वती, महात्मा धर्ममुनि (कानपुर) आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही और प्रवचन भी सुनने को मिले। इनके अतिरिक्त स्वामी संतोषानन्द जी, स्वामी व्रतानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी निर्भयानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी कृष्णानन्द आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। युवा भजनोपदेशक श्री मधुरम आर्य अमृतसर, श्रीमती नीतू आर्या, श्री मनोज शास्त्री, श्री संजय शास्त्री, श्री सुनील शास्त्री आदि के भजनों का भी कार्यक्रम बीच–बीच में होता रहा। यज्ञ में वेदपाठ का दायित्व हरी शास्त्री एवं लेखराज शास्त्री तथा राजेश शास्त्री (छत्तीसगढ़) ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया।

30 सितम्बर को दयानन्द मठ चम्बा एवं महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय का वार्षिक समारोह प्रारम्भ हुआ और 2 अक्टूबर, 2024 को सायंकाल सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आचार्य महावीर शास्त्री जी ने विद्यालय की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हमारा उद्देश्य बच्चों का निर्माण करना है, जिससे यही बच्चे देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकें। यहाँ पर पढ़ रहे बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी दिये जाते हैं। छात्र एवं छात्राओं को वेद पाठ तथा वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करने की विशेष शिक्षा एवं प्रेरणा दी जाती है जिस कारण से वे बड़े सुन्दर ढंग से वेद पाठ कर पाते हैं। प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले शारद यज्ञ का विशेष प्रभाव विद्यालय के बच्चों पर पड़ता है।

महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय, दयानन्द मठ चम्बा का स्थान हिमाचल प्रदेश के विशेष विद्यालयों में गिना जाता है। कार्यक्रम के उपरान्त सभी अतिथियों, अविभावकों एवं उपस्थित गणमान्य महानुभावों के लिए सुन्दर जलपान की व्यवस्था की गई थी।

3 अक्टूबर, 2024 को प्रातः 6.30 बजे से 4 अक्टूबर, 2024 प्रातः 10 बजे तक दुर्लभ शारद यज्ञ चला। निरन्तर चलने वाले इस विशेष यज्ञ में समुचित मात्रा में शुद्ध घृत एवं सामग्री का प्रयोग हुआ। 28 घण्टे निरन्तर चलने वाले इस यज्ञ में सैकड़ों स्त्री–पुरुषों ने आहुतियाँ प्रदान की। ऋग्वेद के आधार पर यह दुर्लभ शारद यज्ञ राष्ट्र में वीरता, पौरुष एवं स्वाभिमान को बढ़ाने की भावना से किया जाता है। यज्ञ के दौरान बीच–बीच में यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य विद्वानों के व्याख्यान तथा भजनीकों के भजन भी नियमित होते रहे और 4 अक्टूबर, 2024 को प्रातः 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

पूर्णाहुति के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्बोधन में दैनिक संध्या, उपासना, दैनिक स्वाध्याय तथा साप्ताहिक अथवा पाक्षिक यज्ञ अवश्य करने का संकल्प दिलवाया। वहीं उन्होंने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं जिससे स्वयं को सुख और प्रसन्नता मिले और दूसरों का उपकार हो वे सभी यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ में प्राणीमात्र के कल्याण की भावना निहित है। उन्होंने कहा कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्मः' यज्ञ दुनिया का श्रेष्ठतम् कर्म कहलाता है। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ में यदि गाय का घृत और औषधि युक्त सामग्री का प्रयोग किया जाये तो उससे विषैले रोगाणु तो नष्ट होंगे ही क्योंकि यज्ञ की अग्नि में विषैले जीवाणुओं तथा तत्त्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता होती है। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायु मण्डल की पवित्रता, विविध रोगों का नाश तथा दीर्घायुष्य जीवन की प्राप्ति होती है। स्वामी जी ने उपस्थित सभी आर्यजनों को यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व को समझाते हुए कहा कि हम सबको प्रतिदिन औषधियुक्त सामग्री तथा शुद्ध देशी घी से यज्ञ करना चाहिए। हमें भारत की प्राचीन यज्ञीय परम्परा को पूरे विश्व में फैलाने का प्रचार–प्रसार करना चाहिए। इससे मानवता एवं पर्यावरण का अत्यन्त उपकार होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज हमेशा कहा करते थे कि पूर्ण समर्पित भाव से यज्ञ तथा परोपकार के कार्य करने चाहिए। उन्हीं की प्रेरणा से आचार्य महावीर जी व इनके सभी सहयोगी जिनमें मुख्यरूप से स्वामी सुमेधानन्द शिष्यमण्डल, दयानन्द उच्च विद्यालय के सभी अध्यापक–अध्यापिकाएँ एवं अन्य कार्यकर्ता विशेष रूप से यज्ञ एवं परोपकार के कार्यों में लगे रहते हैं। ये सभी महानुभाव प्रशंसा के पात्र हैं। पूज्य स्वामी समुमेधानन्द जी महाराज द्वारा शुरू किये गये दुर्लभ शारद यज्ञ को निरन्तर जारी रखने के संकल्प के लिए स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य महावीर जी को विशेष साधुवाद दिया।

पूर्णाहुति के अवसर पर आचार्य महावीर सिंह जी ने इस शारद यज्ञ के समस्त सहयोगियों एवं आगन्तुक संन्यासियों, विद्वानों एवं गणमान्य महानुभावों का मठ की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया तथा अपना आशीर्वाद एवं सहयोग बनाये रखने की प्रार्थना की।

इस पाँच दिवसीय कार्यक्रम में मुख्यरूप से श्री श्रीमती सरस्वती आर्या, श्रीमती करुणा आर्या (अध्यक्ष, विद्यालय समिति), श्रीमती बृजबाला (प्रधानाचार्या), श्री रमेश चन्द्र शास्त्री, श्रीमती डिम्पल आदि के अतिरिक्त श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, श्री अमर सिंह आर्य, श्री विक्रम महाजन, श्री मोहन वेदाचार्य, श्री लोकेन्द्र शास्त्री, श्री हेम सिंह शास्त्री, श्री वीरेन्द्र सुपुत्र श्री चन्दूलाल आर्य, श्री मानसिंह, श्री राकेश शास्त्री, श्री दीनानाथ, श्री राजेन्द्र शास्त्री, श्री सुरेश शास्त्री, श्री विशाल, श्री हितेष, श्री हितार्थ, श्री आदर्श, श्री हर्ष, श्री चिराग, श्री रितिक सहित अन्य कार्यकर्ताओं एवं विद्यालय की अध्यापिकाओं का विशेष सहयोग रहा। दुर्लभ शारद यज्ञ में आचार्य महावीर शास्त्री एवं श्रीमती सरस्वती आर्या के अतिरिक्त श्री जनक राज दुग्गल एवं श्रीमती कंचल दुग्गल (अमृतसर), श्री अजय बजाज एवं श्रीमती रजनी बजाज (फिरोजपुर), श्री जगत प्रिय खन्ना (टांडा) सपत्नीक यजमान बने उनके अतिरिक्त आचार्य महावीर सिंह जी की सुपुत्री सुश्री चेतना आर्या, उनकी पुत्रवधु श्रीमती करुणा आर्या, श्री रमेश चन्द्र शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीतू आर्या आदि ने भी यजमान के रूप में आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ में श्री भगवान सिंह कोसीकलां, श्री अवनीश आर्य बागपत, श्री धर्मेन्द्र कुमार छपरौली, श्री आनन्द आर्य एवं छत्तीसगढ़ से पधारे 25 सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल विशेष रूप से यज्ञ में सम्मिलित हुए। इस पूरे कार्यक्रम में उत्साही एवं ऊर्जावान् युवक ऋषिराज आर्य जिन्होंने आचार्य महावीर जी की प्रेरणा से छत्तीसगढ़ में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती गुरुकुल की स्थापना की है, की विशेष भूमिका रही। सारे कार्यक्रमों का संचालन श्री ऋषिराज आर्य कर रहे थे। भोजन एवं आतिथ्य का सम्पूर्ण दायित्व बहन सरस्वती आर्या जी ने लिया हुआ था और उन्होंने इस दायित्व को बड़ी तन्मयता और कुशलता के साथ पूरा किया। वे अत्यन्त मृदुभाषी एवं मिलनसार होने के साथ–साथ प्रत्येक अतिथि के साथ आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करने में दक्ष हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त मुख्य यजमान श्री जनकराज दुग्गल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचल दुग्गल ने सभी संन्यासियों, विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं को दक्षिणा एवं कम्बल व शॉल आदि भेंटकर सम्मानित किया। श्री दुग्गल जी ने स्वामी आर्यवेश जी को भी विशेष रूप से सम्मानित किया।

पांच दिवसीय कार्यक्रम में विद्यालय की सभी अध्यापिकाओं एवं दयानन्द मठ चम्बा के सभी कार्यकर्ताओं तथा स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था में अपना योगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

हॉलैण्ड के पं. देवानन्द भगेलू का 60वाँ जन्मोत्सव गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में समारोह पूर्वक मनाया गया

प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी आर्यवेश एवं स्वामी आदित्यवेश ने भगेलू जी को आशीर्वाद दिया

हॉलैण्ड के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री देवानन्द भगेलू ने गत् 30 अगस्त 2024 को अपना 60वाँ जन्म दिवस वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की। कार्यक्रम में सर्वश्री स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, श्री विनय आर्य जी, श्री रामपाल शास्त्री, डॉ. गजानन्द शास्त्री, डॉ. चन्द्रदेव शास्त्री, श्री राजवीर शास्त्री आदि ने श्री भगेलू को अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। यज्ञ के उपरान्त सभी विद्वानों ने श्री भगेलू जी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करते हुए बधाई दी। इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान, गुरुकुल गौतमनगर, श्री विनय आर्य, स्वामी आदित्यवेश आदि ने उन्हें शॉल भेंटकर सम्मानित

किया।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने श्री भगेलू जी को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि पं. देवानन्द जी आर्य समाज के गौरव हैं। इन्होंने अपनी बेटी को कन्या गुरुकुल चोटीपुरा में पढ़ाया और विदुषी बनाया। ये आर्य समाज के सिद्धान्तों को न केवल हॉलैण्ड बल्कि अन्य देशों में भी प्रचारित–प्रसारित करते हैं, इनका जीवन आर्य सिद्धान्तों से ओत–प्रोत है। ये गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के एक उज्जवल उदाहरण हैं। इन्होंने अपनी शिक्षा गुरुकुल में ग्रहण की और आज ये 60 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में यहीं गुरुकुल में आकर मना रहे हैं। इससे इनकी निष्ठा का परिचय मिलता है। स्वामी जी ने उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हुए परमात्मा से प्रार्थना की कि वे सदा सुख–समृद्धि और यश कीर्ति को प्राप्त करें। श्री भगेलू जी ने अन्त में सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

विश्वविख्यात क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के 85वें जन्मोत्सव एवं विश्व शांति दिवस के उपलक्ष्य में 21 सितम्बर, 2024 को पॉली, जिला–फरीदाबाद (हरियाणा) में भव्य कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

यज्ञ में मजदूरों ने शराब एवं मांस छोड़ने का लिया संकल्प

हजारों मजदूरों के लिए सहभोज की रही व्यवस्था

आर्य समाज के महान् संन्यासी, मानव अधिकारों के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता, बेजुबान बंधुआ मजदूरों, बाल मजदूरों, दलितों, शोषितों, किसानों एवं महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के 85वें जन्मोत्सव एवं विश्व शांति दिवस के अवसर पर 21 सितम्बर, 2024 को सायं 4 बजे से 7 बजे तक पॉली क्रेसर जोन, जिला–फरीदाबाद में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की। उनके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के महामंत्री एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. विट्ठलराव, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या एवं राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ऋषिपाल भडाना, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के समन्वयक श्री मकेन्द्र कुमार, प्रसिद्ध मजदूर नेता श्री आर.डी. यादव, प्रसिद्ध मजदूर नेता श्री के.डी. मिश्रा आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया जिसे बहन पूनम आर्या ने सम्पन्न कराया। यजमान के आसन पर संघर्षशील साथी श्री रामशरण सपत्नीक उपस्थित हुए। उनके अतिरिक्त सैकड़ों अन्य मजदूर परिवारों ने यज्ञ में आहुतियाँ दी। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सभी को प्रेरित करते हुए शराब एवं मांस छोड़ने की प्रतीज्ञा दिलाई।

कार्यक्रम में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए प्रो. विट्ठलराव ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी गरीबों, दबे–कुचले एवं बेजुबान लोगों की आवाज थे। उन्होंने जीवनभर शोषण के विरुद्ध संघर्ष किया और गरीबों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। वे गरीबों के मसीहा थे। आज उनके 85वें जन्मोत्सव पर उन्हें हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए संकल्प लें कि उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए हम सभी कृत–संकल्पित रहेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्य को गति प्रदान करने के लिए सभी मजदूर साथियों का आह्वान किया कि आप सभी लोग संगठित होकर यदि आवाज उठायेंगे तो अवश्य ही हमारी जीत होगी। स्वामी जी ने उपस्थित मजदूर साथियों से बंधुआ मुक्ति मोर्चा के प्रसिद्ध नारे भी बुलवाये। इन नारों में कमाने वाला खायेगा, लूटने वाला जायेगा, नया जमाना आयेगा तथा लड़ेंगे जीतेंगे आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर 85 मजदूरों एवं 15 कार्यकर्ताओं को कम्बल भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की सफलता का सम्पूर्ण दायित्व श्री रामशरण एवं श्री काशीराम को दिया गया। उन्होंने परिश्रम करके शानदार कार्यक्रम करके दिखाया। इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा फरीदाबाद के अध्यक्ष श्री मायाराम सूर्यवंशी, श्री कैलाश जी, श्री सीताराम जी, श्री रमेश जी, श्री मोहन लाल जी, श्रीमती विमला देवी आदि की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम की सफलता में कार्यालय के साथियों विशेष रूप से श्री विष्णुपाल, श्री जावेद, श्री अशोक वशिष्ठ, श्री सोनू तोमर, श्री संतोष कुमार, श्री मकेन्द्र कुमार आदि का विशेष सहयोग रहा। इस आयोजन के लिए स्वामी जी के अनन्य सहयोगी श्री चन्द्रभान आर्य अमेरिका ने भोजन व्यवस्था के लिए 35 हजार रुपये, श्री मकेन्द्र कुमार ने 11 हजार रुपये, श्री मधुर प्रकाश ने 11 हजार रुपये एवं श्री ऋषिपाल भडाना ने 5 हजार रुपये का सहयोग देकर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के उपरान्त लगभग 1100 मजदूरों ने सहभोज में भोजन, प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज थापरनगर, मेरठ (उ. प्र.) के तत्वावधान में वेद प्रचार समारोह का भव्य आयोजन दिनांक 29 अगस्त, 2024 से 1 सितम्बर, 2024 तक भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आर्य समाज की प्रासंगिकता आज भी और भविष्य में भी बनी रहेगी – स्वामी आर्यवेश

वेद का संदेश जन–जन तक पहुंचाने का कार्य आर्य समाज को करना है – पं. माया प्रकाश त्यागी

पूरे विश्व में वैदिक सिद्धान्तों को प्रचारित–प्रसारित करने का दायित्व आर्य समाज पर है – राजेश सेठी

आर्य समाज थापरनगर, मेरठ, उत्तर प्रदेश का वेद प्रचार समारोह गत् 29 अगस्त, 2024 से 1 सितम्बर, 2024 तद्नुसार भाद्रपद कृष्ण चर्तुदशी सम्वत् 2081 तक भव्यता के साथ आयोजित हुआ। इस समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी व आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, वैदिक विद्वान् आचार्य हरि प्रसाद जी, वैदिक विद्वान् आचार्य पुनीत शास्त्री वैदिक विदुषी डॉ. अर्चना प्रिय आदि के अतिरिक्त प्रसिद्ध युवा भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक आदि ने अपने प्रवचनों से लाभान्वित किया। इस चार दिवसीय कार्यक्रम में प्रातः एवं सायं विभिन्न विषयों पर विद्वानों के प्रवचन एवं व्याख्यान चलते रहे। जिन विषयों पर व्याख्यान रहे उनमें मानव कल्याण का मार्ग वेद पथ, मात्र कर्मकाण्ड ही धर्म नहीं है, राष्ट्र निर्माण के वैदिक सूत्र, जीवन का लक्ष्य तथा वर्तमान में आर्य समाज की प्रासंगिकता आदि उल्लेखनीय हैं। इन सभी विषयों पर सर्वश्री डॉ. संजीव कुमार शर्मा एवं श्री मनीष शर्मा, श्रीमती डॉ. कंचल, डॉ. जसवीर मलिक व श्री नमन मलिक, श्रीमती पूजा, डॉ. श्याम घई, श्रीमती शिखा, श्री ध्रुव अरोड़ा, श्रीमती प्रीति सेठ, डॉ. कपिल सेठ, डॉ. ज्ञानेश्वर टांक, डॉ. विरोत्तम तोमर, श्री चन्द्रकान्त, डॉ. हरेन्द्र चौधरी, डॉ. वीरेन्द्र आर्य, डॉ. अर्पणा नयन, डॉ. अल्पना शर्मा, श्रीमती प्राची सेठ, श्री गौरव सेठ, श्रीमती इन्दिरा सिंह, श्रीमती ऋचा सेठ, श्री बिदुला सोनी, श्रीमती मीनू, श्रीमती शशि, श्री हिमांशु गुप्ता आदि के अतिरिक्त श्रीमती शैली शर्मा, श्री मनीष शर्मा, श्रीमती वन्दना, श्री अविरल शर्मा, श्रीमती अंजू, श्री राकेश जैन, श्री मनोज बाठला, श्रीमती रचना, श्रीमती ऋचा, श्री अंकित गुप्ता, श्री सुभी बंसल, श्री वरुण बंसल आदि का विशेष सहयोग रहा। पूरे कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के प्रधान श्री राजेश सेठी ने किया। उनके साथ मंत्री श्री मनीष शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार, उपप्रधान श्री आनन्द वर्द्धन झा, उपमंत्री श्री भानू बत्रा, पुस्तकाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार गुप्ता तथा स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती प्रीति सेठी, मंत्री श्रीमती कमलेश चांदना एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती शोभा मलिक ने अत्यन्त पुरुषार्थ के साथ समारोह की व्यवस्था में अपना अपूर्व योगदान दिया।

समारोह के समापन सत्र में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए विश्व विख्यात स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज की प्रासांगिकता पर जोर देकर कहा कि वर्तमान में आर्य समाज की प्रासांगिकता पहले से अधिक बढ़ गई है और इसकी प्रासांगिकता भविष्य में भी बनी रहेगी। स्वामी जी ने कहा कि जिस उद्देश्य को लेकर महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी उस उद्देश्य की पूर्ति होने तक आर्य समाज निरन्तर कार्य करता रहेगा। विदित हो कि महर्षि दयानन्द जी ने पूरे विश्व में अवैदिक मान्यताओं के बढ़ते प्रभाव को देखकर अनुभव किया था कि जब तक मानव मात्र वेदानुकूल जीवनशैली, पूजा पद्धति एवं विविध कार्यों को नहीं करेगा तब तक विश्व में शांति नहीं आ सकती। उन्होंने वेद के प्रचार–प्रसार को पूरे विश्व में फैलाने के लिए और समस्त और सभी प्रकार के अन्धविश्वास, पाखण्ड, जातिवाद, आर्थिक असमानता, अन्याय एवं शोषण आदि भयंकर समस्याएं समाप्त नहीं होंगी तब तक आर्य समाज की प्रासांगिकता बनी रहेगी।

वैदिक विद्वान् एवं सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज की प्रासांगिकता को सिद्ध करते हुए कहा कि आर्य समाज का कार्य अभी बहुत बाकी है, जब तक दुनिया में अज्ञान, अन्याय एवं अभाव रहेगा तब तक आर्य समाज की प्रासांगिकता बनी रहेगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के 8वें नियम में लिखा है – अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

मेरठ के लोकप्रिय नेता एवं पूर्व सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल ने अपने सम्बोधन में आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के उपकारों को स्मरण किया और उन्होंने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द जी आर्य समाज की स्थापना नहीं करते तो आज नारी जाति को जो सम्मान मिल रहा है वह नहीं मिल पाता। अभी भी बहुत सारे क्षेत्र अछूते हैं, जिनमें आर्य समाज की भूमिका अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए आर्य समाज की प्रासांगिकता पर प्रश्न उठाना गलत है।

कार्यक्रम में मेरठ की सभी आर्य समाजों के प्रमुख सदस्यों, पदाधिकारियों एवं स्थानीय विद्वान् एवं पुरोहितों ने भी भाग लिया।

अन्त में पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल मेरठ ने ऑन लाईन अपने संक्षिप्त उद्बोधन में सभी को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

हमारी चिरंतन संस्कृति की विशेषता

– हृदयनारायण दीक्षित

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आज अखिल भारतीय बहस का विषय बन गया है। कुछ वर्ष पूर्व एक गोष्ठी में उ. प्र. की राजधानी लखनऊ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर बड़ी-बड़ी बातें हुई। पत्रकार प्रभाष जोशी ने जर्मनी को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का जन्मदाता बताया। भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को जर्मनी के नाजीवाद से भी जोड़ दिया। श्रोता चमत्कृत थे।

जर्मन राष्ट्रवाद का सार संक्षेप इसी बहस की दृष्टि से उपयोगी होगा। सन् 1870 ई. के आसपास का जर्मनी वास्तविक रूप में कोई देश नहीं था। यह नार्डिक ट्यूटन जातियों का समूह था। कोई राष्ट्रीय चेतना नहीं थी। जर्मनी निवासी रोमन राज्य के अधीन थे और राष्ट्रवाद शून्य था। 1748 में जे. सी. हरडर नाम के विचारक ने 'आईडियाज आन फिलास्फी ऑफ हिस्ट्री ऑफ मैनकाइंड'' नामक किताब लिखी। यह हरडर जर्मनी के ''सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'' के जन्मदाता माने जाते हैं। उसका कहना था कि सच्ची सभ्यता स्थानीय मूल से ही विकसित होती है और एक भाषा वाली जनता की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है।

हरडर ने एक मजेदार बात कही कि प्रत्येक सभ्यता की एक आत्मा होती है। यही आत्मा राष्ट्रीय प्रकृति होती है। हरडर ने इसका नाम ''वोल्कजिस्ट रखा। जर्मनी के इतिहास में सन् 1800 नवजागरण का काल माना जाता है। प्रसिद्ध चिंतक जोहान फिख्टे 1808 में ''ऐड्रेसेज टु नेशन'' नामक किताब में अपनी राष्ट्रवादी विचारधारा के पक्ष में दिए गए भाषण छपवाए। इनमें 'विशेष राष्ट्रीय पहचान' व ''पितृ भूमि'' के प्रति निष्ठा पर सर्वाधिक जोर था। फिख्टे ने राष्ट्रीय संकट के वक्त संविधान और कानून के बजाय देशभक्ति को ज्यादा महत्व देने का सिद्धान्त बताया। इसी समय विश्वविख्यात चिन्तक हीगल ने मौलिक विचार देकर राष्ट्रवादी भाव को आगे बढ़ाया। इसी वैचारिक प्रवाह में जर्मनी जागा। 1806 में राइन महासंघ बना। 38 राज्यों ने एक जर्मन महासंघ बनाया। इस संघ की एक संसद बनी। आस्ट्रिया का राज्याध्यक्ष नरेश इसका अध्यक्ष बना। प्रशा का नरेश अपने नेतृत्व में एकीकृत जर्मनी चाहता था। आस्ट्रिया इसका विरोधी था। प्रशा के राजा ने ए. एफ. विस्मार्क को चांसलर (1892) बनाया। विस्मार्क ने पहले प्रशा के साथ शेल्सविग और होल्सटीन जीता। 1866 में आस्ट्रिया और प्रशा का युद्ध हुआ। प्रशा जीता। इस प्रकार मेन नदी के दक्षिण के चार राज्यों को छोड़ बाकी जर्मनी एक हो गया। बाद में फ्रांस हारा। 18 जनवरी 1871 को प्रशा के राजा विलियम (प्रथम) जर्मन सम्राट बने। यूरोप के मानचित्र पर एक एकीकृत जर्मनी राज्य बना।

भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विरोधी जर्मनी का उदाहरण देते समय इन तथ्यों को नजरअंदाज करते हैं। नाजीवाद से भारतीय राष्ट्रवाद की भी तुलना भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से नहीं हो सकती।

भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मूल संस्कृति है। संस्कृति और राष्ट्र के एकात्म होने की भारतीय प्रतीति जर्मनी राष्ट्रवाद के जन्म (सन् 1748) में हजारों वर्ष पहले की है। वेदों में सांस्कृतिक मूलक राष्ट्रभाव अनेकानेक जगह आया है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में बाकायदा राष्ट्रगीत है। इस गीत में ऋषि ने राष्ट्र में ब्रह्म तेजधारी विद्वानों, पराक्रमों योद्धाओं, दुधारू पशुओं, तीव्रगामी अश्वों, गुणवती नारियों, विजयकामी सभ्यजनों, समयानुकूल वर्षा और हरी भरी कृषि की प्रार्थना की है और राष्ट्र के योगक्षेम की मंगलकामना चाही है। दरअसल भारत का राष्ट्रजीवन सत्यकामी है। उसने पाया कि मनुष्य एक रहस्य है। तमाम आधुनिक वैज्ञानिक खोजों, विचार तथा दर्शन की हजारों व्याख्याओं के बावजूद मनुष्य एक पहेली है। एक अचरज है, एक अचम्भा है। मनुष्य एक लघुतम बीज जैसा है पर अनन्त असीम सम्भावनाओं से युक्त यह बीज बड़ा रहस्यपूर्ण है। प्रत्येक बीज सदा एक जैसे फूल-फल देता। लेकिन मनुष्य बीज सदा एक जैसे फूल फल नहीं देता। प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने ढंग का पुष्प है। प्रत्येक की अपनी विशिष्ट महक है। सबकी अपनी-अपनी पंखुरियां हैं। इसलिए सभी मनुष्यों के लिए एक जैसी परिभाषा गढ़ना उचित नहीं होगा।

विश्व सभ्यता और विचार चिन्तन में इतिहास में इस समूची पृथ्वी पर पहली बार भारत में ही मनुष्य की विराट रहस्यमयता पर जिज्ञासा का जन्म हुआ। भारत ने इन चुनौतियों को निकट से देखा। छोटा सा मनुष्य विराट सम्भावनाओं से युक्त है। विराट सृष्टि में अनन्त सम्भावनाएं और अनन्त रहस्य छिपे हैं। जितना भी जाना जाता है उससे भी ज्यादा बिना जाने रह जाता है। सो भारत के मनुष्य ने सम्पूर्ण मनुष्य के अध्ययन के लिए स्वयं (मैं) को प्रयोगशाला और समूची सृष्टि को अध्ययन का विषय बनाया। भारत में बुद्धि का असीम विकास हुआ। हृदय की शक्ति का कहना ही क्या? बुद्धि के विकास से ''ज्ञान'' आया। हृदय के विकास से भक्ति। भक्त और ज्ञानी अंततः एक ही निष्कर्ष पर पहुंचे। भक्त अंत में ज्ञानी बना। भक्त को अन्ततः व्यक्ति और समष्टि का एकात्म मिला। द्वैत मिटा, अद्वैत का ज्ञान हो गया। ज्ञानी का अंत में बूंद और समुद्र के एक होने का साक्षात्कार हुआ। व्यक्ति और परमात्मा, व्यष्टि और समष्टि की एकात्मक प्रतीति मिली और ज्ञानी आखिरकार भक्त बना। लेकिन ज्ञान की तरह अनुभूति उधार नहीं मिलती। परम ज्ञानी को मिली अनुभूति का कारण उसका अपना अनुभव है। परमभक्त के हृदय में खिला प्यार का कमल भक्ति का अनुभव है। अनुभव ही सारे तर्कों, कुतर्कों और विश्लेषणों का न्यायाधीश होता है इसलिए भारत के प्रत्येक जन में स्वयं ही प्रत्येक अनुभव से गुजर कर सत्य की प्राप्ति की परम्परा प्रारम्भ हुई। भारत सत्य का सनातन खोजी बना। भारत सिर्फ एक भूखण्ड नहीं है। यह सिर्फ एक सम्प्रभु राज्य भी नहीं है। समूची सृष्टि के रहस्यों को जान लेने की सनातन अभीप्सा है भारत। भारत और अमृत प्यास समानार्थी है। भारत एक सनातन यात्रा है। यह यात्रा कब प्रारम्भ हुई? किस जगह प्रारम्भ हुई? कब समाप्त होगी? इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता इसीलिए भारत के पास आधुनिक शैली वाला इतिहास नहीं है। 'सनातन' का कोई इतिहास होता भी नहीं, ऐसे प्रश्नों का उत्तर देना जरूरी ही हो तो कह सकते हैं भारत की सनातन यात्रा अनंत से अनंत की दिव्ययात्रा है।

भारत विश्व मनुष्यता का स्वर्णिम अतीत है और भारत ही विश्व मानवता का इन्द्रधनुषी सपना भी। भारत के भाग्य के साथ समूची विश्व मानवता का भाग्य जुड़ा है। समूची पृथ्वी पर सिर्फ भारत ने अपनी समूची जीवन ऊर्जा को सत्य की खोज से जोड़ा। पूरी विनम्रता के लिए और आत्यंतिक निरहंकारिता की खातिर ही अपना सर्वस्व लुटाया। हमारे पूर्वजों ने भौतिक समृद्धि की परवाह नहीं की। भूख एवं नींद जैसी अति आवश्यक जैविक जरूरतों को भी नजरअंदाज करते हुए हमारे पूर्वजों ने ज्ञान, भक्ति, योग एवं ध्यान-साधना जैसे आंतरिक संसाधनों का विकास किया। विश्व मानवता के ज्ञात इतिहास में सत्यखोजी तप साधना सिर्फ मनुष्य और मनुष्यता के हित के लिए इसी देश ने चलायी है।

वैसे तो ईश्वर और परमात्मा पर सारी दुनिया में तर्क हुए हैं। मनुष्य सारी दुनिया के अध्ययन का विषय रहा है लेकिन भारत को छोड़ बाकी दुनियां के विद्वतजन कुछ जटिल विचारधाराओं के अतिरिक्त आगे किसी यात्रा पर नहीं निकल सके। उन्होंने संगठित पंथ बनाये, रिलीजन गढ़ा, मजहब बनाया लेकिन भारत ने कोई आग्रही ग्रंथ नहीं गढ़ा, न ही रिलीजन। तमाम आक्रमणों को निराशा और स्वयं के खत्म हो जाने के अंधकारपूर्ण समय के बीच भी भारत ने ज्ञान की प्यास का दीपक नहीं बुझने दिया। प्रकाश का प्रतीक यही दीपक भारत की जीवन रचना का मूल तत्व है और ज्ञान प्रकाश की गहन अभीप्सा हमारा स्वभाव। सत्य अभीप्सु इन हजारों लाखों भारतजनों के द्वारा विश्व मानवता के लिए किए गए कर्म भारत का सहज स्वभाव बने। प्रकृति ने हिमालय जैसा शिखर प्रतीक दिया। दुनिया की सारी ऋतुएं अपनी पूरी आभा के साथ यहां खिलती हैं। वन, उपवन, सदा प्रवाहित नदियां और रत्न गर्भा कृषि के मध्य सत्य खोजी ऋषिजनों ने भारत के प्राकृतिक पर्यावरण को लगातार महकाया। प्रकृति और भरतजनों द्वारा विश्व मानवता के लिए निर्मित इसी अद्भुत पर्यावरण का नाम है भारतीय संस्कृति।

भारत की इसी संस्कृति से इस धरती पर एक अद्भुत किस्म का विद्युत चुम्बकीय परिवेश भी बना। प्राकृतिक पर्यावरण और कठिन तप, ज्ञान, योग ध्यान के मानवीय कर्म निर्मित इस अद्भुत इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड से स्वाभाविक ही एक विशेष प्रकार की विद्युत चुम्बकीय तत्वों का विकिरण जारी है। यह तरंगे सारी दुनिया को आकर्षित करती हैं। भारतीय संस्कृति की यही विकिरण ऊर्जा ही हमारी चिरंतन संस्कृति का वैशिष्ट्य है। भूगोल इतिहास और राज्य व्यवस्थाओं की क्षुद्र संकीर्णताओं से दूर विश्व के प्रत्येक मनुष्य का अभ्युदय और निःश्रेयस भारत की मनोकामना है। राज्य की कामना (''न त्वकाम्य हे राज्य'') हमारा इष्ट नहीं है। राज्य हमारी परम्परा में साधन मात्र है। विश्व मानवता का कल्याण हमारी चिरंतन साधना है। हम भारत के लोग एक राष्ट्र है। सदा सनातन संस्कृति ही हमारी राष्ट्रीयता है। हम सब इसी संस्कृति के कारण एक चिरंतन राष्ट्र है। यह संस्कृति अजन्मा है, सो यह राष्ट्र भी अमर है। यह संस्कृति अजेय है, सो यह राष्ट्र भी अजेय है।

भारतीय राष्ट्र का तात्पर्य एक विशेष भूसांस्कृतिक वैशिष्ट्य है। हमारा राष्ट्रभाव सांस्कृतिक राष्ट्रभाव है। भारतीय राष्ट्रवाद दरअसल भूसांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के बड़े भाई

श्री धर्मवीर सिंह त्यागी जी का आकस्मिक निधन

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के बड़े भाई श्री धर्मवीर सिंह त्यागी जी का विगत 10 सितम्बर, 2024 को 93 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। स्व. श्री धर्मवीर सिंह त्यागी जी की स्मृति में दिनांक 16 सितम्बर, 2024 को ग्राम–मोहम्मदपुर, आमद, बागपत, जिला–गाजियाबाद (उ. प्र.) में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई जिसमें अनेकों गणमान्य महानुभाव भारी संख्या में उपस्थित होकर अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित किया। विशेष रूप से स्थानीय सांसद डॉ. राज कुमार सांगवान, पूर्व राज्य सभा सदस्य श्री के.सी. त्यागी जी, पूर्व स्थानीय विधायक श्री सुदेश शर्मा, पूर्व विधायक श्री प्रशान्त चौधरी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित हुए।

श्रद्धांजलि सभा का मंच संचालन सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने बड़ी ही कुशलता के साथ संचालित किया। शांति पाठ के बाद श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म – यज्ञ

– डॉ. जगदीश प्रसाद

यज्ञ एक व्यापक शब्द है। ऋग्वेद में यह शब्द 580 बार, यजुर्वेद में 243 बार, सामवेद में 63 बार तथा अथर्ववेद में 298 बार अर्थात् चारों वेदों में यह शब्द 1184 बार आया है। निघण्टु के अनुसार – यज्ञ को वेव, अध्वर, मेघ, निमघ, सबनम, अग्निहोत्र, देवता, मख, विष्णु, इन्द्र, धर्म प्रजाति आदि नामों से पुकारा जाता है।

'यज्ञ' शब्द 'यज्' धातु से बना है। 'यज्' धातु के तीन अर्थ हैं : 'यज् देवपूजासंगतिकरणदानेषु' – (अ) देवपूजा, (आ) संगतिकरण तथा (इ) दान। अतः यज्ञ के विविध प्रकार – देवयज्ञ (अग्निहोत्र या हवन), ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अश्वमेधयज्ञ आदि में यज्ञ के प्रायः सभी अर्थ समाविष्ट हैं। संसार के विभिन्न देशों में अनादि काल से यज्ञ होता आया है, भले ही आज उसका रूप दीपक, मोमबत्ती या अगरबत्ती ने ले लिया है।

प्रस्तुत विषय की सीमा में रहते हुए, यज्ञ के एक प्रकार – देवयज्ञ पर, विशेषतः दुर्व्यसन – निवारण के संदर्भ में वस्तुस्थिति द्रष्टव्य है।

मन के व्यापारों पर यज्ञ का प्रभाव –

भौतिकता प्रधान आधुनिक जीवन ने मानव मस्तिष्क में अनेक प्रकार की तनाव ग्रन्थियाँ उत्पन्न कर दी हैं, जिनसे जीवन का महत्त्व ही समाप्त हो गया है। इस प्रकार के मानसिक तनावों पर यज्ञ का सकारात्मक प्रभाव खोजने के लिए दिल्ली के डिफेंस इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजियोलोजी एण्ड ऐलाइड साइंसेज के वैज्ञानिक ई. डॉ. डब्ल्यू. सेल्वामूर्ति ने एक साहसिक प्रयोग किया था। इसको एक शोधपत्र के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई. आई. टी.), दिल्ली में 4 नवम्बर, 1989 को आयोजित हुए योगसम्मेलन में प्रस्तुत किया गया था। इस शोधपत्र का शीर्षक था – **मन्त्रों का मन और शरीर के स्वास्थ्य पर प्रभाव।** डॉ. सेल्वामूर्ति ने इस प्रयोग के ईसीजी, ईईजी, वर्णक्रम विश्लेषण तथा आधुनिक कम्प्यूटर आदि सुसंस्कृत उपकरणों एवं तकनीकों का प्रयोग किया था। आठ व्यक्तियों पर प्रयोग के पश्चात् उनका अवलोकन था कि यज्ञ के दौरान हृदय स्पन्दन की दर कम होने की प्रवृत्ति होती है, त्वचा का ताप एक डिग्री सेल्सियस बढ़ जाता है, इत्यादि। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यज्ञ के वायुमण्डल से मस्तिष्क की व्यग्रता आकुलता कम होती है, मन का तनाव कम होता है तथा मन–मस्तिष्क अपने स्वाभाविक (तनावमुक्त) रूप में कार्य करने के लिए मुक्त हो जाता है।

दुर्व्यसन निवारणार्थ यज्ञ : प्रदूषण का एक भयंकर प्रकार है विचार–प्रदूषण। इससे व्यक्ति के विचार इतने प्रदूषित हो जाते हैं कि वह अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा समझने में असमर्थ हो जाता है। वह शराब, गांजा, स्मैक, धूम्रपान, गुटखा तथा चाय–कॉफी आदि को सुख का साधन समझने लगता है। अतः वह नशीले पदार्थों के सेवन का आदी बन जाता है – व्यक्तिगत स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, परिवार तथा समाज के लिए यह दुर्व्यसन हानिकारक ही नहीं, वरन सर्वविनाशकारी होते हुए भी व्यक्ति इसे छोड़ नहीं पाता है। व्यक्ति का स्वाभिमान तथा मनोबल – संकल्पशक्ति आदि समाप्त हो जाते हैं – इससे जीवन का अर्थ ही समाप्त हो जाता है। पाश्चात्य जगत् में प्रयुक्त होने वाली विधियाँ ऐसे व्यक्ति को सुधारने में अपने आपको असमर्थ पाती है। ऐसी भयावह स्थिति में प्राचीन मनीषियों द्वारा आविष्कृत यज्ञ ही डूबते को तिनके का सहारा सिद्ध होता है। इस दिशा में भारतीय सेना में साइकियाट्री विभाग में सीनियर एडवाइजर के पद पर सेवारत लै. कर्नल जी. आर. गुलेचा द्वारा किये गये अनेक प्रयोगों में से मात्र दो का उल्लेख प्रस्तुत है, जिससे यज्ञ का प्रभाव स्पष्ट होता है।

कलकत्ता में 1987 में हुए इण्डियन साइकियाट्रिक सोसाइटी के उन्तालिसवें वार्षिक अधिवेशन में श्री गुलेचा ने अपना अग्निहोत्र ऐन यूजफुल ऐडजंक्ट इन ट्रीटमेण्ट ऑफ ए रजिस्टेण्ट ऐण्ड डिमोटिवेटिड स्मैक ऐडिक्ट नामक शोधपत्र का वाचन किया था, जो बाद में इण्डियन जॉर्नल ऑफ साइकियाट्री के 1987 के 29 (3) अंक में पृष्ठ 247–252 पर प्रकाशित हुआ था। उस शोध पत्र का केवल सारांश निम्नांकित है :

स्मैक से मुक्ति – भारतीय सेना के एक पच्ची वर्षीय अधिकारी व्यक्ति को प्रयोग के लिए चयनित किया गया था। वह व्यक्ति गत कई वर्षों से सुरा, कोकिन, कैन्नाबिस तथा सिग्रेट आदि नशीले पदार्थों का सेवन करता रहा था। प्रयोग के समय वह प्रतिदिन तीन ग्राम हेरोइन (स्मैक) का आदी बना हुआ था। नशा छुड़ाने के लिए प्रयुक्त होने वाली प्रचलित विधियों को उस पर दो बार प्रयुक्त किया जा चुका था, किन्तु वे उसकी नशे की लत (दुर्व्यसन) न छुड़ा सकी थीं।

उस दुर्व्यसनी की यज्ञ द्वारा चिकित्सा करने के लिए उसे अग्निहोत्र के सम्मुख बैठने के लिए प्रेरित किया गया। अनिच्छापूर्वक अनमने मन से तीन दिन यज्ञ के सामने बैठने पर, यज्ञ के सामने बैठने की उसमें इच्छा जागृत हुई – किसी अन्य के द्वारा यज्ञ में लाये जाने के स्थान पर, वह स्वयं यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए आया सातवें दिन तो उसकी अवस्था यह थी कि वह स्वयं रुचि पूर्वक आहुतियाँ डालने लगा।

उसके स्वभाव में परिवर्तन का एक दैनिक चार्ट बनाया गया था। चार सप्ताह के यज्ञ से उसमें स्मैक के लिए तलब समाप्त हो गई। आगामी पन्द्रह मास के नियमित यज्ञ के अभ्यास से वह सब प्रकार के नशों से घृणा करने लगा – नशों से मुक्त हो गया। सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय विद्यमान अंतरिक्ष किरणों तथा यज्ञ से उत्पन्न विद्युत चुम्बकीय तरंगों के तुल्यकालन के कारण में मन की शान्ति का रहस्य है। यद्यपि वर्तमान काल के वैज्ञानिक जगत को यह अविश्वसनीय प्रतीत होता है, किन्तु आँकड़े तथ्य को प्रकट करने में समर्थ हैं।

शराब से मुक्ति : मनोवैज्ञानिक श्री गुलेचा का एक दूसरा प्रयोग शराब (सुरा) की लत वाले व्यक्ति पर था। पाश्चात्य जगत में यह धारणा है कि शराब के सेवन को कम तो किया जा सकता है, किन्तु इससे पूरी तरह मुक्त नहीं हुआ जा सकता। श्री गुलेचा का निम्नलिखित प्रयोग अग्निहोत्रा इन दि ट्रीटमेन्ट ऑफ ऐल्कोहॉलिज्म नाम के शोध लेख के रूप में जनवरी 1989 में कलकत्ता में हुए इण्डियन साइकियाट्रिक ऐसोसिएशन के इकतालिसवें वार्षिक अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया था। इस शोध का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है।

अट्ठारह मद्यपों पर यज्ञ का प्रयोग किया गया। कम्प्युटरीकृत ईईजी अध्ययन किया गया। दो सप्ताह के नियमित दैनिक यज्ञ से उनमें शराब पीने की इच्छा समाप्त हो गई। यज्ञ करना छोड़ने पर कुछ सप्ताह तक उनकी अवस्था ठीक रही, किन्तु, उसके पश्चात् उनमें शराब पीने की इच्छा पुनः जागृत हो गई। इस प्रकार दो सप्ताह के यज्ञ के अभ्यास से उनको दुर्व्यसन से पूर्णतः मुक्ति नहीं मिली। अतः शराब पीने के दुर्व्यसन से पूर्णतः मुक्ति पाने के लिए यज्ञ को नियिमत रूप से सदैव प्रतिदिन करना शराब की आदत को छुड़ाने में एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

उपर्युक्त प्रयोगों पर मनन करने से पता लगता है कि यज्ञ करने से मन की सद्वृत्तियाँ जागृत होती हैं, जो व्यक्ति को शराब, सुल्फा, गांजा, भांग, अफ़ीम, स्मैक तथा तम्बाकू आदि के सेवन से विमुख करती हैं। अतः दुर्व्यसन के निवारण में यज्ञ एक अमोघ अस्त्र है। इसीलिए धर्मग्रन्थों में कहा है कि यज्ञं तपः यज्ञ करना सर्वोत्तम तप है।

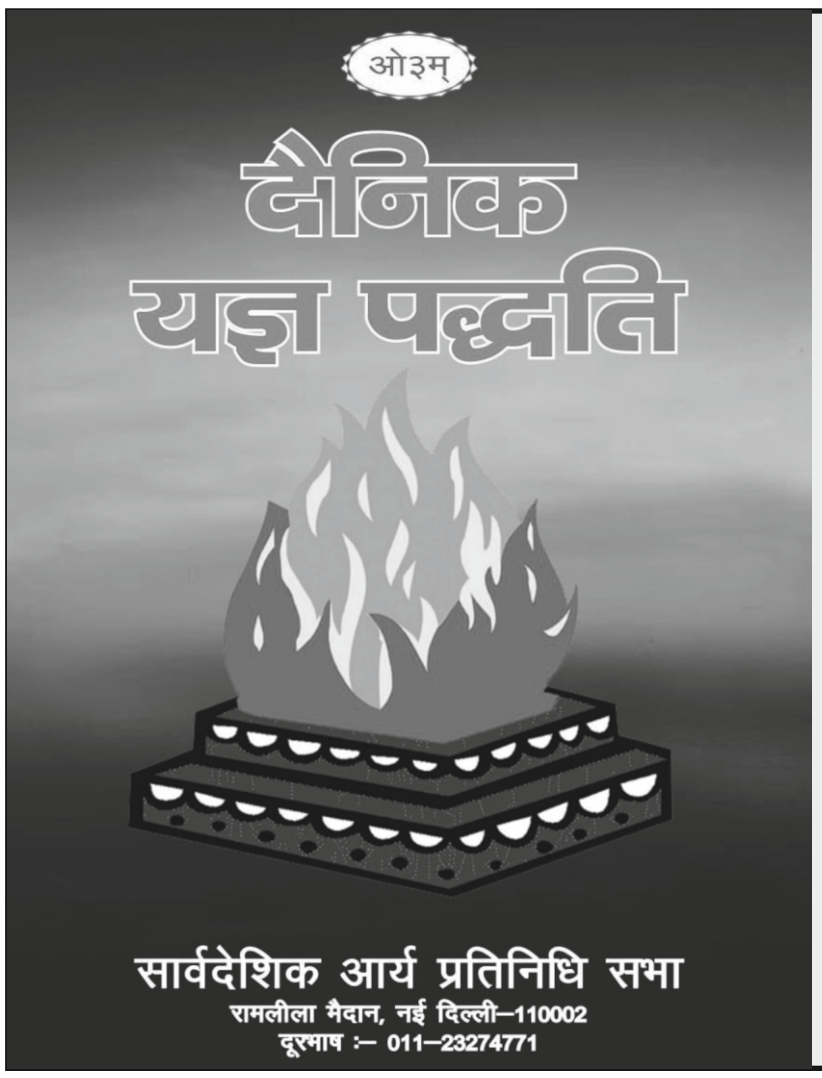

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

देश की प्रसिद्ध आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली में महर्षि दयानन्द द्विजन्म शताब्दी भव्यता के साथ मनाई गई

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के महामंत्री डॉ. कैलाश कर्मठ के भजनों की धूम रही

यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने सुशोभित किया

भारत की प्रसिद्ध आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली के तत्वावधन में 15 सितम्बर, 2024 को महर्षि दयानन्द जी की द्विजन्म शताब्दी धूमधाम के साथ मनाई गई। इस अवसर पर यज्ञ का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें आर्य समाज के धर्माचार्य एवं सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने ब्रह्मा पद को सुशोभित किया। शताब्दी समारोह में विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन तथा डॉ. कैलाश कर्मठ, महामंत्री भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के जोशीले भजनों ने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। यज्ञ के उपरान्त लगभग एक घण्टे तक श्री कैलाश कर्मठ जी के भजनों का कार्यक्रम चला तत्पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ। स्वामी जी ने आर्य समाज शक्तिनगर के समस्त उन दिवंगत बुजुर्गों को स्मरण किया जिन्होंने आर्य समाज के पौधे को पल्लवित एवं पुष्पित कर आगे बढ़ाया था। स्वर्गीया माता लीलावती गुप्ता के कार्यों की प्रशस्ति करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि माता जी साक्षात् देवी स्वरूपा थीं। उन्होंने आर्य समाज शक्तिनगर में संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों, साधु–संन्यासियां एवं आगन्तुक अतिथियों के लिए निःशुल्क भोजन व्यवस्था प्रारम्भ करके ऐतिहासिक कार्य किया था। सन् 1983 में जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की बलिदान शताब्दी दिल्ली में मनाने के लिए पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की प्रेरणा से आर्य समाज शक्तिनगर में कार्यालय प्रारम्भ किया गया तभी से निःशुल्क भोजन की व्यवस्था प्रारम्भ हुई थी जो निरन्तर चलती रही और वर्तमान में भी चल रही है। माता लीलावती गुप्ता जी के माध्यम से अनेक छात्रों को छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान की जाती थीं। इसी प्रकार देश में स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में जब भी कोई सामाजिक आन्दोलन या अभियान चलाया गया तो उसका केन्द्रीय कार्यालय आर्य समाज शक्तिनगर रहा। स्वामी जी ने कहा कि मुझे भी यह सौभाग्य मिला कि 1980 से मैं लगभग 30 वर्ष आर्य समाज शक्तिनगर में रहा और यहीं से देश–विदेश में जाकर आर्य समाज का कार्य किया। मुझे प्रसन्नता है कि यह आर्य समाज वर्तमान में भी सक्रिय है। आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी जो 1970–71 में इस समाज में आये थे लगभग 55 वर्ष से वे यहाँ रहते हुए पूरे देश और विदेश में वैदिक धर्म की दुंदुभी बजा रहे हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने वेदों का ज्ञान जन–जन के लिए उपयोगी बताकर मानवता का महान् उपकार किया है उन्होंने नारी जाति को पढ़ने का अधिकार व कर्मकाण्ड करने–कराने का अधिकार दिलाकर गौरवान्वित किया। महर्षि जी ने समाज में जन्मना जाति को वेद विरुद्ध बताते हुए वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना की। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, हिन्दी भाषा, मानव निर्माण के लिए सोलह संस्कार एवं परिवार निर्माण के लिए पंच महायज्ञ की व्यवस्था दी। महर्षि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रणेता थे। उनकी प्रेरणा से अनेक क्रांतिकारी देश की बलिवेदी पर शहीद हुए और भारत को आजाद कराने के लिए अपनी प्राणों की बाजी लगाई। स्वामी आर्यवेश जी ने इस बात पर बल दिया कि वर्तमान में आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को और अधिक सक्रिय एवं जागरूक होने की आवश्यकता है। आज भी समाज में विविध समस्याएं व्याप्त हैं, जिन्हें समाप्त करने के लिए सख्त संघर्ष आवश्यक है।

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्य समाज शक्तिनगर को एक बार फिर से अपने पिछले इतिहास को दोहराना होगा। हमें अच्छे आर्य विचारों के नवयुवकों एवं परिवारों को आर्य समाज से जोड़ना होगा जिसमें आप सभी के सहयोग की आवश्यकता है। अन्त में शास्त्री जी ने आगन्तुक विद्वानों एवं अन्य महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सर्वश्री डॉ. सत्यकाम जी, डॉ. अजीत कुमार जी, ओम प्रकाश शास्त्री जी मेरठ, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार जी, श्री कंवर पाल शास्त्री आर्य समाज विरला लायंस, श्री अभय देव शास्त्री आर्य समाज गुजरावालां टाऊन, डॉ. राम भरोस आर्य समाज जहांगीरपुरी आदि के अतिरिक्त स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती शालिनी गुप्ता, संरक्षक डॉ. स्नेहलता गुप्ता, श्रीमती मंजू गुप्ता आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहीं। यज्ञ में यजमान के रूप में श्री आदित्य गुप्ता एवं श्रीमती निधि गुप्ता प्रतिष्ठित हुए। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

आर्य संन्यासी स्वामी निर्भयानन्द सरस्वती जी (हाथरस) के 90वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का हुआ आयोजन

प्रसिद्ध विदुषी डॉ. पवित्रा विद्यालंकार रहीं यज्ञ की ब्रह्मा

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी भी यज्ञ में हुए सम्मिलित

आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी निर्भयानन्द सरस्वती के 90वें जन्मोत्सव के अवसर पर हाथरस, उत्तर प्रदेश में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पद को कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी, जिला–हाथरस की आचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार ने सुशोभित किया। वेद पाठ का दायित्व कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने निभाया। इस अवसर पर श्री लाखन सिंह आर्य भजनोपदेशक के भजनों का भी निरन्तर कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ में मुख्य रूप से स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी संगीतानन्द, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी कृष्णानन्द, स्वामी वेदानन्द, स्वामी शान्तानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द आदि संन्यासियों के अतिरिक्त आर्य समाज के प्रधान श्री बुद्धसेन आर्य, कोषाध्यक्ष

डॉ. प्रभु दयाल एवं यज्ञ के संयोजक श्री भूपेन्द्र सिंह आदि ने नियमित रूप से यज्ञ में भाग लिया। श्रीमती अंजुला माहौर एवं श्री दुर्गेश वार्ष्णेय की भी उपस्थिति रही। 1 सितम्बर, 2024 को स्वामी आर्यवेश जी राजस्थान सभा के प्रधान श्री विजरजानन्द जी एवं हरियाणा सभा के कार्यकारी प्रधान श्री रामनिवास आर्य एवं छपरौली के श्री धर्मेन्द्र कुमार यज्ञ में पहुंचे। यज्ञ आयोजन समिति की ओर से इन सभी का स्मृति चिन्ह एवं शॉल देकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का यज्ञ के विषय पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के माध्यम से स्वामी निर्भयानन्द जी को उत्तम स्वास्थ्य एवं शतायु होने की शुभकामना प्रदान की गई।

स्वामी आर्यवेश जी ने सभी संन्यासियों, वेद पाठी ब्रह्मचारिणियों, यज्ञ ब्रह्मा डॉ. पवित्रा विद्यालंकार आदि को राशि भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

प्रो० विट्ठलराव आ५, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।